

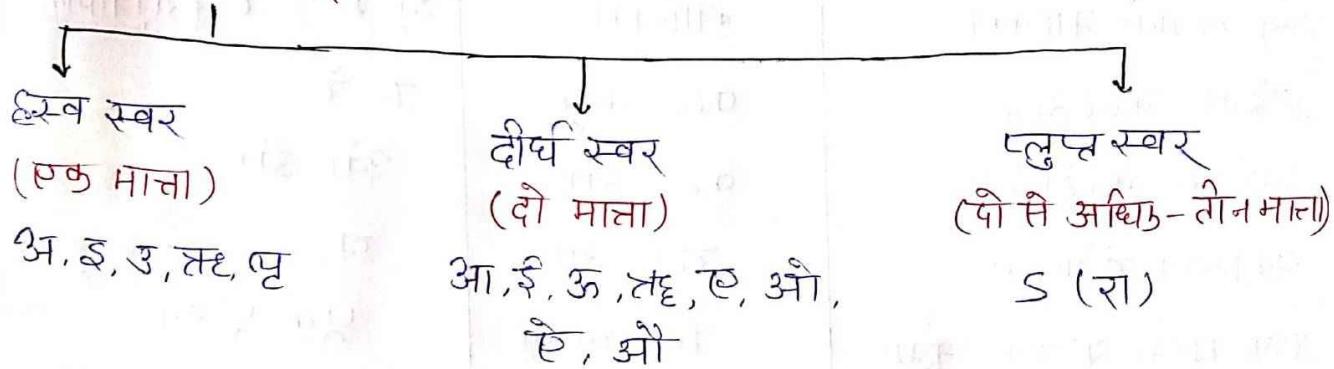
* (संस्कृत) *

* नवी दो त्रिकार के होते - (1) स्वर (2) व्यंजन

स्वरः - स्वरों की सं. ७ मानी गई है।

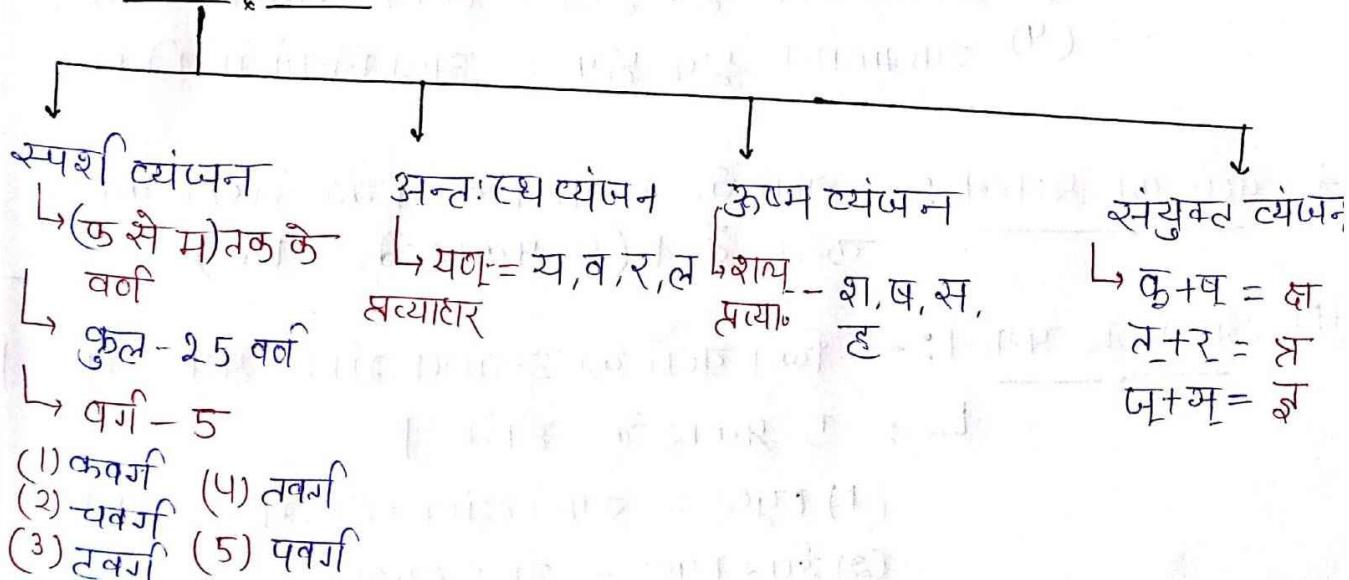
मुख स्वर - ५ (अ, इ, उ, ए, औ)
 संयुक्त स्वर - ४ (ए, औ, औ, औ)

* स्वरों के भेद



व्यंजनः - व्यंजनों की सं. (३३) मानी गई है।

* व्यंजन के भेद :-



* उच्चारण स्थान *

उच्चारित वर्ण सूत्र

उच्चारण स्थान

उच्चारित वर्ण

अनुहंविसंबन्धीयानां कठः

कठ

अ, आ, एवर्ग, ह, विसंग

अनुभवानां तालुः

तालु

इ, ई, य, चवर्ग, श

टेष्टुरधानां मुष्टिः

मुष्टि

ट्ट, टवर्ग, र, ष

भृतुलसानां दन्तः

दन्त

त्ट, तवर्ग, ल, ञ

उपृपृथ्यानीयानां ओष्ठोः

ओष्ठ

उ, ऊ, पवर्ग, उपृथ्मानी (पृपृ)

अमङ्गलानानां नासिका

नासिका

अ, म, इ, ऊ (अनुनासिक वर्ण)

स्पैदौतोः कठतालु

कठ-तालु

ए, औ

ओदोतोः कठोष्ठम्

कठ - ओष्ठ

ओ, औ

पकारस्य द्वोष्ठम्

दन्त - ओष्ठ

व,

जिह्वमूलीय जिह्वमूलम्

जिह्वमूलम्

पूक पूख

* अयोगवाहः — 4 होते हैं ।

(1) अनुस्वार > अँ, अः

(2) विसंग

(3) जिह्वमूलीय पूक पूख = विसंग के लमान लिखते हैं।

(4) उपृथ्मानीय पूप, पूफ = आधे विसंग में लिखते हैं।

* वर्णों का स्थलनः — वर्णों के उच्चारण करने की व्यंग्यों की स्थलन, कहते हैं। (2 प्रकार के होते)

(a) अध्यन्तर स्थलनः — जिन वर्णों का उच्चारण मीत्री स्थलन से होते हैं ले 5 प्रकार के होते ।

(1) एष्टृ — स्पर्शित्यंभन (क, म तक के वर्ण)

(2) ईष्टृ एष्टृ — अन्तः एष्टृ

(3) विष्ट - अच् (स्वर)

(4) द्विष्ट विष्ट - ऊण्ठाण्घन

(5) संष्ट - आ

(8) बाहृ स्थलः - मुख से वर्षी बाहर निकलने का स्थल करते ।
→ 11 स्थार के हीते ।

(1) विवार

(2) श्वास → रक्र मत्याहार (क, र, ल, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स)

(3) अधोष

(4) संवाद

(5) नाद

(6) धोष

(7) अन्पमाण - वर्षी का 1, 3, 5 / याल (श, ष, र, ल)

(8) महामाण - वर्षी का 4, 5 / राल (श, ष, स, ह)

(9) उपात्र

(10) अनुदात्र

(11) स्वरित्र

* ह - संवार, नाद, धोष, महामाण (इसी तरह बाली के वर्षी निजाते)

* य - संवार नाद धोष अन्पमाण (जाते)

* वर्षी- वियोजन को कहते - वर्षी-वि-यास

* प्रत्याहार *

* महिश्वर सूत होते - (14)

1. अश्वा
2. लेद्धन्तुक
3. उओड़
4. रुओच्च
5. हयवरट
6. लण
7. अमड्डनम्
8. इभग्न
9. घटधष्ट
10. भवगाहदश
11. एवफृहयप्रत्तत्व
12. कपय
13. शाखसर
14. हल

* फौन- सा वर्ण वो बार आता - ह

* प्रत्याहार का अर्थ है - संक्षेपीकरण

* संस्कृत वर्णमाला में जुल प्रत्याहार है - 42

Note- कुछ विवरण 43/44 भी मानते हैं।

* प्रत्याहार के कुछ उदाहरण -

अच् - अ, इ, उ, ई, औ, छै, अँ

अक् - अ, इ, उ, ई, औ

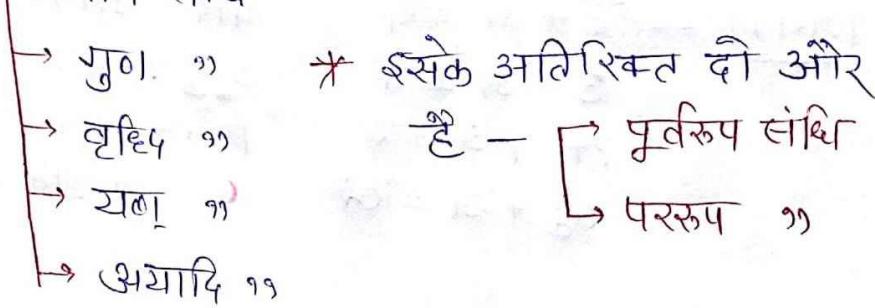
ईक् - ई, उ, ई, औ

यण् - य, व, र, ल

* संधि *

- Types : — (1) स्वर संधि (अचु) (2) व्यापन " (हल) (3) विलय " "

(1) स्वर संधि



(a) दीर्घ संधि : — अक्षः सर्वो दीर्घः

नियम : — अ/आ + आ/अ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

ट्रै + ट्रै = ट्रै

Ex — परमात्मा : = परम + आत्मा (अ+आ = आ)

रवीन्द्र : = रवि + इन्द्रः (इ+न्द्र = इन्द्रः)

वेद्यत्सव : = वेद्य + त्सव (उ+त्सव = उत्सव)

पितृणाम् = पितृ + त्रहाम् (त्रै + त्रै = त्रै)

(b) गुण संधि : — आदः गुण

नियम = अ/आ + इ/ई = ए Ex = नरैन्द्रः = नर + इन्द्रः

अ/आ + उ/ऊ = ओ परीपकारः = पर + उपकारः

अ + ट्रै = अरै देवर्षिः = देव + त्रैर्षि

(C) पृष्ठिसंधि : — वृष्ठिरेपि

नियम — अ/आ + र्ष/र्ह = र्
उप/आ + ओ/ओ = ओ तनीष्ठि = तन + ओष्ठि

Ex-

(D) यणसंधि : — इकोयाचि

नियम — इ+अ = य
उ+अ+व = उनु
त्रृ+अ = रृ
लृ+अ = लृ

Ex =
यदि + अपि = यद्यपि
उनु + अय = उन्नय
पितृ + अदेश = पित्तादेश
लृ + आकृति = वाकृति:

(E) अयादिसंधि : — हेचोऽयवायावः

नियम — ज्वर छ, है, ओ, ओ के बाद कोई भी स्वर आये
तो इनके स्थान पर क्रमशः अय, आय, अव, आव
हो जाता ।

Ex = नयनम् = नौ + अनम् ($\text{ए} + \text{अ} = \text{अय}$)

भवनम् = भौ + अनम् ($\text{ओ} + \text{अ} = \text{अव}$)

अन्य संधि :

(A) पूर्वकिप : — एङ्गपदन्तादति

र्ष/ओ + छब्ब अकार = अकार(S)

Ex = हरे + अव = हरेऽव

(B) पररूप संधि = स्फृपररूपम्

अकारान्त उपसगि + छ/ओ = पररूप

प्र + एषते = प्रैषते

उप + ओषति = उपौषति

यंपन संधि : — (हल्ल संधि)

सकार	— श, त, थ, द, ध, न
शकार	— श, च, छ, ष, झ, ञ

⑤ झुल संधि : — स्तो॒रचना॒झुः

पूर्विक में — सकार परबर्ती॑ पद में — शकार

आदेशात्मक Change — (सकार का शकार में)
(तवर्गी का चर्ग में)

Ex — रामस् + शौते = प्रभु रामशौते
स्त्र + चरितम् = स्त्रचरितम्

⑥ छुल संधि : — छुनाछुः

पूर्विक में — सकार (स, तवर्गी)

परबर्ती॑ में — षकार (ष, चर्ग)

आदेशात्मक Change — (सकार का षकार में)
(तवर्गी का चर्ग में)

Ex — रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः
त्रै + टीका = त्रटीका

⑦ त्रौष्णि — (भृत्य संधि)

पूर्विक में — तवर्गी

परबर्ती॑ में — षकार

Change : — सवर्गी ही जाता है।

Ex = तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लैख = उल्लैख

तत् + भय = तल्लभय

(i) जशत्व सन्धि :— इसके दो मौद हैं :—

(i) पदान्त जशत्व सन्धि :— अलं ज्ञोऽन्ते

* भील का जश ही ज्ञाता है।

भील	→	जश
कवर्गि ह	→	ह
यवर्गि श	→	श
टवर्गि ष	→	ष
पवर्गि	→	प
तवर्गि स	→	स
श्वर्गि रु	→	रु

Ex = वाम् + फिल = वाम्फिलः

स्मृत + जनः = स्मृजनः

(ii) अपदान्त जशत्व सन्धि :— अलं जश झशि।

पूर्वपद में — भील (1, 2, 3, 4, 5 सत्येक वर्ग का + अलमव्यञ्जन)

परवर्ती में — जश (वर्गिण 3, 4 वर्ग)

Change to — ती. जश (ज, ष, ग, झ, द) में बदल जाता

Ex = अपु + न्धिः = अन्धिः

योधु + न्धाः = योद्धुः

भ्रमु + न्धः = भ्रन्धः

(e) पर्वत संक्षिप्तः — खारि-च

पूर्ववर्ण — भास् (कर्मा. 1, 2, 3, 4 + ऊर्ध्ववर्ण)

परवर्ण — रखर (वर्गिका 1, 2 + श + ष + स)

Change to — तो. पर (क, च, ट, त, प) में बदल जाता

Ex — हैद + ता = हैता

स्यद् + कारः = सत्कार

(f) अनुस्वार संक्षिप्तः — मोङ्नुस्वारः

* किसी पट्टे के अन्त में (म) हो और उसके परवर्ण में (त्यंपन) हो. उसका अनुस्वार हो जाता।

Ex — हरिम् + वंदे = हरिं वन्दे Note = यदि (मनारुक्ति वापस्वर) हो तो स्वरमें मिल जाता है। रामम् + नमामि = रामं नमामि = जलं + इष्टदति = भासि (जलभित्ति)

(g) परस्ववर्ण संक्षिप्तः — अनुस्वारस्य-यसि परस्ववर्ण

पूर्ववर्ण — अनुस्वार

परवर्ण — यसि (स्व, श + ष, ह की होड़कर) सारे व्यंजन आंगी

Change to — परस्ववर्ण (वर्गिका 5 वाँ वर्ण) हो जाएगा।

Ex — शाम् + तः = शान्तः

छुन् + ठिः = छुण्ठिः

(h) हुत्व संक्षिप्तः — शश्वद्दोषिति

पूर्वपट — सकार

परवर्ण — शकार

Change — हुकार हो जाता है।

Ex = तद् + श्विवः = तद्विवः

सत् + शीलः = सद्वीलः

+ विश्वार्थि →

सत्त्व सन्धि : —

(1) विश्वार्थनीरास्य सः : — कुद्द नियमों की देखना
पद्धति है —

(१) पूर्वपद + परवर्णी = अदिश

विश्वार्थ(ः) + रवर्
(वजका १, २वर्णी)
श ष श)

नियम

(a) (विश्वार्थ(ः) + कु/त = स्)

Ex = नमः + कार् = नमकार्
नमः + ते = नमते

(b) (विश्वार्थ(ः) + च/ह = श्)

Ex = निः + चल = निरचल
निः + हल = निरहल
कुः + चित् = कुचित्

(c) (विश्वार्थ(ः) + छ, छ/ट, ट/ष, ष = ष्)

Ex = धनुः + टंकार् = धनुष्टंकार्
निः + प्राण = निष्ट्राण
रामः + दीड़ते = राम्पटीकृते

(2) रुत्त सन्धि : —

(a) संस्पृष्टिः : —

पूर्वपद + परवर्ण = आदेश

अ/आ) को हैड्कर + स्वर।

अन्य स्वर अमा/ बग्गीका 1,2, विलगी(ः) 3 ही

Ex = निः + बल = निर्बल : [यदि विलगी का मैल स्वयंजन से ही, तो आम्या (र) बनता है।]

दुः + बल = दुर्बल :

पिठः + उत्तर = पिरुत्तर : [यदि विलगी का मैल स्वर से ही, तो पूरा (र) बनता है।]

(3) उत्त सन्धि : —

(a) अतो शौरप्लुतप्लुते : —

पूर्वपद + परवर्ण = आपेश

विलगी तैपहले + (अन) ही, तो (र) के स्थान पर (उ) ही जाता।

(म) हीमा

Ex = रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

शिवउ + अवदत् = शिवोऽवदत्

(b) शौरिः : — रु के बाद रु अयि तो पूर्व(र) का लोप।

Ex = पुनर् + रमते = पुनरमते

हरिर् + रमते = हरिरमते

(१) हाश च : — (हश सत्याहर = वर्ग मा. ₹. 34,5 लाख +)
यरतवह

पूर्विक + परवर्ती = आपेक्षा

विलगिके पहले + हश सत्याहर = और ही पाता है
'अ' हो,

Ex = रजः + गुण = श्रोगुणः

तपः + बल = तपोबलः

मनः + हर = मनोहरः

* समास *

समास का अर्थ होरा — संक्षिप्त

* समास विग्रह के विरुद्ध < लौटि (इस लौट में प्रचलित)
अलौलिक (इस लौट में कम प्रचलित)

* समास के प्रकार : —

संख्यत में समास 5 प्रकार के होते —

(1) केवल समास

(2) अव्ययीभाव समास

(3) तत्पुरुष समास < कमधारण

(4) बहुवीहि समास < द्विगु

(5) छन्द समास

(1) केवल समास : — विशेष संज्ञा रहित समास को उच्चते।
→ इस समास का लौटिक/अलौटिक विग्रह

एवाधिक पूर्ण है।

Ex = भूतपूर्वः = लौटिक वि. अलौटिक वि.
पूर्वम् भूत पूर्व अम् भूत सु

वाग्धर्थिव = वाग्धर्थी इव

अस्यमर्थः = अस्यम् टद्दण

उत्तमर्थः = ३त्मम् टद्दण

नैकः = न छकः

(2) अत्यरीकाम समासः — पूर्वपदस्थानः अन्यरीभावः

- * हमेशा नपुंसकलिङ् में होता है।
- * पहला पद स्थान होता है।
- * पहचान के लिए : — आगे उपचर्ग लगा रहता है।

Ex = पथाशक्ति — शक्ति अनतिक्रम्य

उपनारम् — गंगाया समीपम्

स्त्रिदिनम् — दिनं दिनं स्त्रि

- * जब संत्वयावस्थी का संबंध वंशावस्थी से हो तो
अर्थ : — द्विमुनि = हि औं मुनि औं

- * नदीभिष्ट्वा — नदी का नाम संत्वया के साथ होता
= पञ्चगंगाम् = पञ्चानां गंगानाम् समाख्यः

(3) तटपुरुष समासः — उत्तरपदस्थानः

उत्तरपदस्थान & पूर्वपद जीवा है।

- * तटपुरुष समास के 6 में से है —

(i) कर्म तटपुरुष (कृणात्प्रितः = कृष्णम् आकृतिः)

(ii) उरण ॥ (गुणहीनः = गुणोन् वीनः)

(iii) सम्प्रस्थान ॥ (देशभक्तिः = देशाय भक्तिः)

(iv) अपाधान ॥ (पथभ्रष्टः = पथात् भ्रष्टः)

(v) सांख्य ॥ (राखपुरुष = राहुः पुरुषः)

(vi) कवित्रिष्ठ ॥ (कवित्रिष्ठ = कवित्रु श्रीष्ठः)

तत्पुरुष समास के अन्य मैदानः —

(1) नव तत्पुरुषः — पूर्वपद में नकारात्मक भाव प्रेक्षित करने के लिछ न'। अ' जीड़ा जात है।

अनः = न जानाति (जो जानता न है)

अनश्वः = न अश्वः (जो धीड़ा न है)

(2) अप्युक्त तत्पुरुषः — समस्त पद में पूर्व की विभक्ति का लीप न है।

दिवंगतः = दिवं गतः

अन्तेवासी = अन्ते वासीः

(3) उपपद तत्पुरुषः — जब उपपद किया का स्थायीण है,

मर्मः = मर्म जानाति

धर्मिः = धर्म जानाति

(4) स्तादि तत्पुरुषः — पूर्वपद का प्रस्तारभ है, इस गति तत्पुरुष भी कहते

कुपुरुषः = कुल्लितपुरुषः

प्राचार्यः = प्राचार्यः अचार्यः

(i) कर्पिकारय समासः — विशेषणं विशेषयोऽपुस्तकम्

(ii)

⇒ पूर्वपद में विशेषण / उपमान

उत्तरपद में विशेष्य / उपमेय

* इसके 4 भेद हैं —

(a) विशेषण-विशेष्यः — द्वितीय पद के अनुसार पहले पद में विभक्ति आती।

(4)

विग्रह करते वक्त 'ता असी/तर' आता है।

Ex — सुन्दरपुस्तकम् = सुन्दरम् च असी पुस्तकम्
नीलोत्पलम् = नीलं च तत् उत्पलम्
धीताम्बरः = धीतं च तत् अम्बरः।

*

*

*

(a)

(b) उपमान-उपमेयः — उपमानवाचक शब्दग्रस्तामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है।

विग्रह करते वक्त "इव/ए" की पोड़ा जाता है।

(b)

Ex — धनरथामः = धन इव रथामः

मुखचन्द्रः = मुखं चन्द्र इव।

(c) उभयपद समासः — दोनों ही पद विशेषण होते हैं।

(c)

Ex — चराचरम् = चरम् अचरम्।

पीतहृष्णः = पीतः च हृष्ण च

(d) रूपकः — पूर्वपद उपमेय और उत्तरपद उपमान होते हैं।

Ex — मुखकमल — मुखम् इव कमलः

दुःखागर — दुःख इव लागरः।

(iii) द्वितीय समास :— पूर्व पद संब्लिंगावाची और उत्तरपद संज्ञा हो।

Ex — पञ्चवटी = पञ्चानां वटानां समाहारः

वतुरुग्गिम् = वतुनां गुग्गानां समाहारः

तिलोकः = टायाठां लोडानां समाहारः

(4) छन्द समास :— उभयपदभ्यानी छन्द (दीनों पद प्रस्थान)

* विश्वास करते वक्त तृतीय शब्द के बाद "ए" लगाते हैं।

* शब्द विपरीष्टिक होते हैं।

* इसके तीन भैंड हैं :—

(a) इतरेतर छन्द :— दीनों पद अपनी-2 भ्रष्टानता रखते

Ex = स्त्रीपुरुषो = एषी-ए पुरुषः!-ए

रांगायुमुने = रांगा-ए यमुना-ए

(b) समाहार छन्द :— अनेक पदों के ठोंगे से छक समुदाय का बोच्च होता है, ये छपैव नपुंसक्लिंग छक्कन्धन में रहता।

Ex = हस्तपादम् = हस्ती-ए पादी-ए

रथाश्वम् = रथश्वच अश्वश्च

(c) एकशोष छन्द :— दो या दो से अधिक पदों को केवल एक शब्द द्वारा संकेत किया जाता।

Ex = पितरो = माता-ए पिता-ए

अज्ञी = अज्ञा-ए अज्ञ-ए

व (५) बहुब्रीहि समासः — कोई पद स्थान नहीं होता,
अपितु अन्य अर्थ बताता है।
(अनेकगति पदार्थ)

बहुब्रीहि के 4 भेद हैं —

(१) समानाधिकरणः — दोनों पदों में समान विभक्ति हो,
दोनों पद विशेषण का ऊर्य करें।

Ex = दशानन् = दशानि अनानि यस्यात्।

पीताम्बरः = पीतम् अम्बर् यस्य तः।

(२) व्यधिकरणः — दोनों पदों की विभक्ति अलग-2 हो। ①

Ex = पक्षपाणि = पक्षम् पाणी यस्य तः।

मृगनयनी = मृगस्य नयने इव नयनौ यस्यात्।

(३) तुल्य योगः — साथ का योग, तब होता —

Ex = समुज्ज! = अनुभेद सहित।

सुखलम् = क्लान्ति समम्

(४) व्यतिहारः — यित्र समास में लड़ाई-झगड़ी का उपाधान हो —

Ex = हस्ताहस्ति = हस्ताख्या हस्ताख्यां स्वृतं युद्धं

केशाकेशि = केशेषु केशेषु मृहीता स्वृतं युद्धं

— संस्कृत कारक —

क्रिया के साथ सम्बन्ध बनाने वाले को कारक कहते हैं।

कारक १ होते हैं → क्रि. कर्म.

→ करण सम्प्रदान

→ अपादान, अधिकरण

उपकारक २ होते हैं → सम्बन्ध, सम्बोधन (ये कारक नहीं होते)

— कारक & विभक्ति —

① कर्त्ता कारक → प्रथमा विभक्ति

सूत - प्रातिपदिकर्थ मात्रे, लिङ्गमात्रायाच्छिवर्ये,
संख्यामात्रे - च प्रथमात्म स्यात्।

कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति) का प्रयोग →

→ संज्ञा शब्दों में

→ सम्बोधन - सम्बोधन में

→ संख्या मात्र में → परिमाण (मिश्चित), क्वन (ल, दि, षड़)

→ लिंग प्रदर्शिण में → (लिंग, पु, नपु-)

→ प्रेरणा देने पर

→ कर्ता प्रधान पर (उस्ते कर्त्तरि)

→ प्रयोजक कर्त्ता में भी

कुमित्य में कर्म के कर्ता बन पाने पर उमि में प्रथमा विभ.

(उस्ते कुर्मणि)

१ व

कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति)

स्थिति = कर्तुं जीविततम् कर्मः

२

- ① अनुच्छेद कर्माणि — अनुच्छेद कर्म में द्वितीया विभक्ति
 - ② निया विशेषणी — निया विशेषण में भी
 - ③ अकथितं च → 16 धातु (दृष्टि, याति, प्रत्यक्ष, पञ्च, दृष्टि, विजि, रस्य, लूप, शास्त्र, सघ, मुष्टि, नी, रु, कृष्ण, वहु, विव.)
 - ④ गत्यर्थ अर्थ → गमनार्थ धातु में (जाने के अर्थ में)
 - ⑤ कालाद्वनोरत्यन्त संयोगं च → कोई कार्य निरन्तर चै
- Ex - उसने बारह तर्हि तन पढ़ा।
- ⑥ उपसर्गी में भी
 - अस्थिशीड़र्यासां — अस्थि, शीर्ष, स्था, आस्था।
 - उपान्दव्याङ्कसः — उप, अनु, अस्थि, आङ्क।
 - अभिनिवश्च च — अभि, नि
 - ⑦ उभसावर्तसीः कायः, अभितः परितः समयाः निवृष्टाः।
 → उभयतः (दोनों तरफ), सर्वतः (सब तरफ), द्विवृष्ट (द्विपार), उपुर्युरि (ठीक ऊपर), अस्थीड़व्यः (ठोक नीचे), अभितः (सब तरफ), परितः (चारों ओर) समय (प्रिकट), निवृष्टा (प्रिकट), हा, तथा प्रति (की तरह, की नेली) तु योग में द्वितीया विभक्ति।
 - ⑧ अन्तरान्तरेण युक्ते : — अन्तरा (लीची में) अन्तरेण (किं में द्वितीया।

करण कारक (तृतीया विभावित)

साधकतम् करणम् — पिसकी सहायता से कर्ता अपना कार्य करता है।

Ex - राम नैनी से देखता है।

→ यैनाङ्क विकारः — शरीर के ऊंगों के विचार में

→ सहयुक्तेऽप्रथमे — साध अर्थ रखने पर

Ex - सीता राम के साध बन जाती है।

→ हेती — हेतु अर्थ में (Ex - धन से आदर होगा)

→ कर्त्तकरणयोऽतृतीया → भाववाच्य + कर्मवाच्य में
कर्ता करण में तृतीया विभावित

→ प्रकृत्यादिभ्यर्तृतीया उपसंरथ्यानम् → प्रकृति, जाति,
नाम, वैग, सृज, द्रुख में भी

→ लुभ्यार्थरुलोपमात्र्याम् → हृष्य (पथिगिवाची) शब्दों
के योग में तृतीया विभावित

Ex - लुणोन् समः कोडपि नामित।

→ पृष्ठगिवनानानाभिर्तृतीयान्यतरस्याम् → पृथक्, छिना,
नाना शब्दों में (द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी)
विभावित होती है।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

- पब कोई वस्तु दी जाए (सप्ता के लिए) → चतुर्थी विभक्ति
पब कोई वस्तु की जाए (थीड़ समय के लिए) → पाषाणी वि. हो
सूध → कमिंग यमभिप्रैति सं सम्प्रदानम् । 1. १
- स्त्रयथनिं पूर्णमाणः → रुचि के अर्थ में चतुर्थी वि.
Ex → लालक को मीदक अच्छे लगते। 2. १
- कुष्ठदुहेष्यसुशाधानां चं प्रति कोपः → कुष्ठ (कुष्ठसा),
द्वृष्ट (शत्रुता), ईष्या (जलन), असृष्ट (निष्पा) धातुओं
में भी चतुर्थी वि. ।
- नमः स्वस्तिस्वाहास्वद्यालं बषट् योगाच्चः → नमः (नमस्कार),
रवस्त्रिः (कल्याण), स्वादा (धूलि), में भी
- स्पृहेरीप्सितः → स्पृहा (चाहना) के अर्थ में भी
Ex → राम धन को चाहते हैं । 4.

अपादन कारक (पंचमी विभाग)

जिसमें इसी वर्तुल का प्रत्यक्ष/कानूनिक रूप से अलग होना पाया जाता → धुवमपार्थी अपादने पंचमी

1. श्रीष्टाणिनां भयः हेतुः → डरने/भय में
Ex → चौरात् विशेषिः।
2. भूवः प्रभवश्च वारोणाथनामीप्सतः आरत्योत्ते प्रयोगे —
→ जिससे कोई वस्तु पैदा हो — गंगा हिमालयात् प्रभव।
→ जिससे कोई वस्तु हटाई जाए — पुष्टि पापात् निवारयति
→ जिसे नियम पूर्ति पढ़ा जाए — उन्हें त्याक्तरां प्राप्त्यामि।
3. अन्यारादितर्तीकृ शब्दाऽनुतरं पदाभास्ति युक्ते →
अन्य (सिवाय), भारात् (समीप/दूर), ईर (दूसरा),
तेहते (बिना), दिशः वस्ति, कालवाचक में भी
4. पंचमी विमर्शः → जब किन्हीं दो वस्तुओं में
इंतजार हो, तब पंचमी वि.
Ex — माता गुजराता भूमेः।
5. आरत्योपयोगे → विधिपूर्वि नियम द्वारा कोई
विद्या ग्रहण की जाए।

* सम्बंध कारक - घण्टी विभक्ति *

* जब छक वस्तु का सम्बन्ध दूसरी वस्तु से हो, तो
वहाँ होती विभक्ति — घण्टी शेषे

* स्पर्श स्थान में होती — द्वितीया / तृतीया विभक्ति

* अनादर के अर्थ में विभक्ति — घण्टी / सप्तमी

* औद्योगिकरण कारक - सप्तमी विभक्ति *

* क्रिया के आधार को कहते हैं — अद्यारोड्यिकरणम्

* एक कार्य होने के बाद दूसरा कार्य होना में होती
है — सप्तमी विभक्ति

* जब समुदाय में किसी वस्तु / घटना की विशेषता
बतलाई जाती है, तब विभक्ति — सप्तमी / घण्टी
(यतश्च पित्तरिणम्)

* साधु-आसाधु के अंथ में विभक्ति होती — सप्तमी

* वाच्य *

वाच्य तीन स्लाइक के द्वारा है -

मु

र्दि

य)

१) कर्तवाच्य

२) कर्मवाच्य

३) भाववाच्य

४) कर्तवाच्यः — किया — कर्ता के अनुसार आती।

Ex — बालकः पतं लिखति।

→ एकवचन किया (परस्मैपद)

कर्मवाच्यः — किया — कर्म के अनुसार आती।

{ कर्म में — प्रथमा विभक्ति
कर्ता में — हृतीया ”
धातु (किया) — आत्मनेपद,

Ex — कृष्णोन कर्त्स्ना हृतः।

→ कृष्ण कर्त्स्ना धातु (आत्मनेपद)

भाववाच्यः — केवल अकर्म धातुओं में होता।

{ किया — आत्मनेपद (लट्टपकार, प्रथमपुण्ड, उक्तवचन) में
कर्ता — हृतीया विभक्ति

Ex — अहं गत्थामि। (कर्तवाच्य)

→ अहं गत्थामि। (भाववाच्य)
कर्ता किया

* उपसर्ग *

* संस्कृत में उपसर्ग होते — २२

* जो मूल शब्द के आगे खड़े — उपसर्ग

- ① अनु (पीढ़ी) — अनुचर, अनुकरण, अनुज, अनुष्ठानम्
- ② अधि (ऊपर) — अध्यक्ष, अधीक्षक, अध्योदेश, अध्यात्म
- ③ अभि (सामने) — अभिवादन, अभिशाप, अभिमुख
- ④ अपि (मिडट) —
- ⑤ अति (षष्ठि) — अत्यधिक, अत्याधार, अत्यन्त
- ⑥ अप (बुरा) — अपमान, अपथक्षा, अपकर्ष
- ⑦ अव (नीचे) — अवशुष्ण, अवतार, अवनति
- ⑧ प्र (अधिकु) —
- ⑨ परा (पीढ़ी) — स्वार, ससार,
- ⑩ प्रति (ओर, उन्होंना) — पराकृम, पराषय
- ⑪ परि (चारी ओर) — स्वत्येत्र, प्रतिकार
- ⑫ नि (नीचे, मिषेध) — परिभ्रन, परिक्षम, परिदृश्य
- ⑬ निष (चिना) — निषेध, निबंध, निष्टुप्त
- ⑭ निर् (बाहर) — निर्भार, निसंपैह, निरहल
- ⑮ दुस् (कठिन) — निर्देश, निरपराध
- ⑯ दुर् (बुरा) — दुर्साहस, दुर्लभ, दुर्लक्षण
- ⑰ वि (अलग) — दुर्लभि, दुर्दिशा
- ⑱ स्तु (धृ-१२) — विवाद, विदेश, विनाय
- ⑲ उद् (ऊपर) — स्तुष्टन, स्तुवित
- ⑳ सम् (अच्छी तरह) — उद्घाम, उल्लम्
- ㉑ उप् (उमीपि) — सम्मान, सम्मति
- ㉒ आङ् (पर्याल) — उपनगरम्
- आपृच्छय

* लिंग *

संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं —

राजन्.आत्मन्

- ① पुणिंग (पैव & असुर, यज्ञ, मैथ, समुद्र, पर्वत, कालवाची शब्द & अन्य से लगापूछी)
- ② स्त्रीलिंग (विंशति से नवति तक संख्यावाची शब्द)
- ③ नपुंसंउलिंग (क्रिया-विशेषण, राक्षस, अहन्. दिन, ल & कठ स्थय)

* वचन *

* संस्कृत भाषा में तीन विवरण होते हैं —

- (1) संक्षेपितः — वर्ग, गण, समुदाय, युगलम्, द्वयम्,
द्विगुलमास उपां, जाति उ अर्थ में, द्वन्द्वसमाप्त
के उपां
- (2) व्यिक्षितः — द्वन्द्वसमाप्त से बने उपां, नीत, हस्त, पाद,
श्रोत में।
- (3) बहुवचन — स्वेदशों के नाम, आपराधीय शब्द,
अक्षत् (चावल), दारा (पर्णी), प्राण, यति,
त्ति से अष्टादशा (अडारह) तक की संख्यावाची शब्द।

अव्यय

प्रमुख अव्यय

प्रमुख अव्ययों की अर्थ सहित सूची अकारादि क्रम से यहाँ दी जा रही है।

अकस्मात् = अचानक	आरात् = समीप, दूर
अन्तः = सामने	अशु = शीघ्र
अत्र = आगे	इतः = इधर
अद्यिरम् = शीघ्र ही	इत्स्ततः = इधर-उधर
अविरात्	इति = (स्नापि-सूचक)
अविरेण = अभी	इत्पन् = इत प्रकार
अविराय	इदानीम् = अब, इस समय
अजस्त्रम् = निरन्तर	इदं = सदृश, सामान
अतः = इतलिए	इह = यहाँ
अतीव = अत्यधिक	इत्तत् = थोड़ा, कुछ, कम
अत्र = यहाँ	उभयतः = जोर से, ऊचे
अथ = अनन्तर	उषा = प्रातःकाल, उषा-काल में
अथ किम् = हाँ, और क्या	ऋते = दिना
अद्य = आज	एकत्र = एक स्थान पर, इकट्ठे
अधः = नीचे, नीचे की ओर	एकदा = एक बार, एक समय
अधुना = इस समय	एव = ही
अन्तः = भीतर	एवन् = ऐसा, इस प्रकार
अन्यत्र = दूसरी जगह	कथम् = कैसे, क्यों
अन्यथा = नहीं तो	कथञ्चित् = जैसे-तैसे, कथमपि
अपरम् = और भी	कदा = कब
अपरेद्युः = दूसरे दिन	कदाचित् = कभी, किसी समय
अभिवः = चारों ओर	किञ्चन
अनुन्त्र = वहाँ, परलोक में, ऊपर	किञ्चित् = कुछ
अलम् = बस, पर्याप्त	किन्तु = परन्तु
असकृत् = बार-बार	किम् = क्या
असम्भ्राति = अनुचित	किवा = अथवा
अहो = अहो!	किल = अवश्य, वस्तुतः
अहोरात्रम् = दिन-रात	कुतः = कहाँ से, कैसे
आम् = हाँ	ननु = ही, निश्चय से
कुत्र = कहाँ, किस स्थान पर	नमः = नमस्कार, प्रणाम
कुत्रिचित् = कहीं-कहीं पर	नाना = अनेक प्रकार से
कृते = के लिए	नाम = नाम
केवलम् = केवल, सिर्फ	निकषा = निकट
क्वच = कहाँ	निकामम् = बहुत अधिक
क्वचित् = कहीं	नूनम् = अवश्य
खलु = अवश्य, निश्चय से	परम् = अनन्तर, इसके बाद
च = और	परश्वः = आने वाला परसों
विरम्	परितः = चारों ओर
विराय = देर तक	
चिरेण	
चेत् = यदि	

आरात् = समीप, दूर
अशु = शीघ्र
इतः = इधर
इत्स्ततः = इधर-उधर
इति = (स्नापि-सूचक)
इत्पन् = इत प्रकार
इदानीम् = अब, इस समय
इदं = सदृश, सामान
इह = यहाँ
इत्तत् = थोड़ा, कुछ, कम
उभयतः = जोर से, ऊचे
उषा = प्रातःकाल, उषा-काल में
ऋते = दिना
एकत्र = एक स्थान पर, इकट्ठे
एकदा = एक बार, एक समय
एव = ही
एवन् = ऐसा, इस प्रकार
कथम् = कैसे, क्यों
कथञ्चित् = जैसे-तैसे, कथमपि
कदा = कब
कदाचित् = कभी, किसी समय
किञ्चन
किञ्चित् = कुछ
किन्तु = परन्तु
किम् = क्या
किवा = अथवा
किल = अवश्य, वस्तुतः
कुतः = कहाँ से, कैसे
ननु = ही, निश्चय से
नमः = नमस्कार, प्रणाम
नाना = अनेक प्रकार से
नाम = नाम
निकषा = निकट
निकामम् = बहुत अधिक
नूनम् = अवश्य
परम् = अनन्तर, इसके बाद
परश्वः = आने वाला परसों
परितः = चारों ओर

जातु = कभी	परेद्युः = दूसरे दिन
झटिति = शीघ्र	पर्याप्तम् = पर्याप्त
ततः = तब	पश्चात् = पीछे
तत्र = वहाँ	पुनः = फिर
तथा = उस तरह	पुनः पुनः = बार-बार
तदा = तब	पुरः
तदानीम् = उस समय	पुरतः = सामने
तहिं = तब	पुरस्तात्
तस्मात् = अतएव, इसलिए	पुरा = पहले, प्राचीन समय में
तावत् = तब तक	पूर्वेद्युः = पहले दिन
तिर्यक् = तिरछे	पृथक् = अलग
पृष्ठतः = पीछे	प्रतिदिनम् = प्रतिदिन
तृष्णीम् = चुप	प्रभृति = से लेकर
दिवा = दिन में	प्रसह्य = बलात्
दिष्ट्या = भाग्य से	युगपत् = एक साथ
दूरम् = दूर	वरम् = अच्छा
द्विधा = दो तरह का	विना = बिना, अतिरिक्त
धिक् = धिक्कार	वृथा = बैकार (व्यर्थ)
ध्रुवम् = अवश्य	वै = अवश्य, निश्चय से
न = नहीं	शनैः-शनैः = धीरे-धीरे
नक्तंदिवम् = रात-दिन	श्वः = आगामी कल
नक्तम् = रात्रि	सकृत = एक बार
प्राक् = पहले	सततम् = सदा
प्रातः = प्रातःकाल, सवेरे	सदा = हमेशा, सर्वदा
प्रायः = बहुधा	सद्य = तुरन्त
बहिः = बाहर	सपदि = तुरन्त
बहुधा = प्रायः	समन्ततः = चारों ओर
भूयः = बार-बार, अत्यधिक	
मनाक् = थोड़ा, कम	
मिथः = आपस में	
मिथ्या = झूठ	
मुहुः = बार-बार	
मृषा = झूठ	
यत् = कि	
यतः = क्योंकि	
यत्र = जहाँ	
यथा = जैसे	
यथा तथा = जैसे-तैसे	
यदा = जब	
यदि = अगर	
यावत् = जब तक	
समया = समीप	
समीचीनम् = ठीक	
सम्यक् = ठीक प्रकार से	
सर्वतः = सब ओर से	
सर्वत्र = सुभी जगह	
सर्वथा = सब प्रकार से	
सर्वदा = सदा	
स्वैरम् = स्वेच्छापूर्वक	
सह = साथ	
सहसा = अचानक	
सहितम् = साथ	
साक्षम् = साथ	
साक्षात् = प्रत्यक्ष	
सामि = आधा	

* लकार *

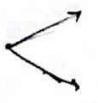
* लकार १० लकार के होते हैं।

- ① लट्ट लकार (कर्तमानकाल)
- ② लिट् " (परीक्षा भूत)
- ③ लृट् " (भविष्यत)
- ④ लुट् " (अनयतन भूत)
- ⑤ लैट् " (संराय अर्थ) — वैदिक अर्थ में स्थौरा
- ⑥ लौट् " (अह्लाधि)
- ⑦ लङ् " (भूतकाल)
- ⑧ लुङ् " (सा० भूत)
- ⑨ लृङ् " (हेतुष्टुम् भूत)
- ⑩ लिङ् " (अनयतन भूत)

विधिलिंग ॥ आशीलिंग

* प्रत्यय *

* जो शब्दों के अन्त में जोड़ जाते हैं।

* प्रत्यय के स्कार  कृद्वन्त प्रत्यय (किया/धारु में जोड़ जाते)
 तद्विद्वन्त प्रत्यय (संज्ञा/विशेषण में जोड़ जाते)

* धारु के अंत में लगने वाले प्रत्यय —

- ① कृद्वन्त प्रत्यय (व्वा, न्यप्, तुमुन्, अनीय --)
- ② तद्विद्वन्त प्रत्यय

* शब्दों के अंत में लगने वाले प्रत्यय —

- ① सुप् प्रत्यय
 - ② एटी „ (टाप्, डीष्, डीन्)
 - ③ तद्विद्वन्त „ (मनुप्, अण्, इन् --)
- * (कृद्वन्त प्रत्यय) *

① कृद्वन्त प्रत्ययः — जब एक ही कर्ता द्वारा छक ही काम
की अमाप्ति बाद दूसरा कार्य उत्तिया जाए।

= श्रीष् - ट्वा

$$\text{Ex} = \text{कृ} + \text{कृद्वा} = \text{कृद्वा}$$

$$\text{दा} + \text{कृद्वा} = \text{दद्वा}$$

$$\text{पा} + \text{कृद्वा} = \text{पीद्वा}$$

② न्यप् प्रत्ययः — जब धारु के पहले कोई उपसंहिती रौप्य
बहु 'कृद्वा' नहीं न्यप् हो जाए।

$$\boxed{\text{श्रीष्} = \text{य}}$$

$$\text{Ex} - \text{आ} + \text{दा} + \text{न्यप्} = \text{आदाय}$$

$$\text{अव} + \text{गम्} + \text{न्यप्} = \text{अवगम्य}$$

③ तुम्हारा सत्ययः — अर्थ हीता - (लिखिए) इन क्रियाके लिए
अन्य कोई क्रिया की जाए।
Ex — मैं खाता चाहता हूँ।

शीष - हम

Ex — भू + हमुन् = भविनुम्

हृश + हमुन् = हृष्टम्

④ यत् सत्ययः — धातु के स्वर का गुण ही जाता है।
(पाठ्यादि) के अर्थ में प्रयोग।

शीष - य

Ex — चि + यत् = चैयम्, चैयः चैया

पा + यत् = पैयम्, पैयः पैया

⑤ किन् सत्ययः — इससे बने संौदैव स्फृतिलिङ् में होंगे।

शीष - ति

Ex — कृ + किन् = कृति:

गम् + „ = गतिः

⑥ न्युट् सत्ययः — भाववचक अर्थ। न्युंसकलिङ् में प्रयोग।
इसके बने न्युं में ही दौरी है।

शीष = यु युवारनाकी सूत से - अन् ही जाता

Ex — लिख + न्युट् = लैखनम्

दा + न्युट् = दानम्

⑦ तत्त्वात् संख्या : — वाइरु / योग्यता बताने के लिए

शेष = तत्त्व

$$Ex = अप् + तत्त्व = अन्तत्त्वम्
कृ + " = कर्तव्यकृ$$

अनीयरूपत्त्वाय : — वाइरु & योग्यता के लिए

शेष = अनीय

$$Ex = कष्ट + अनीयरूप = उद्यनीय
भृ + " = भ्रवनीय$$

⑧ कर्त & कर्तव्य तत्त्वाय : — निर्णासाङ्क होते हैं।

* भूतडाल में प्रयोग होते।

* भाववस्त्य & कर्मवस्त्य में प्रयुक्त।

कर्त का शेष — ल

कर्तव्य " " — तवत् (पुः-पात्र, स्त्री-वती, भुपु-कर्त)

Ex = कर्त = पठ + कर्त = पठितः, पठिता, पठितम्

लिख + कर्त = लिखितः, लिखिता, लिखितम्

कर्तव्य = पठ + कर्तव्य = पठितवान्, पठितवती, पठितवत्

गत + " = गतवान्, गतवती, गतवत्

⑯ शृंग & शान्ति सूत्रयः — दोनों वर्तमान शाली सूत्रयः ।

* परस्मैपद में शृंग & आत्मेपद में शान्ति ।

* कर्ता के विशेषण के क्रृप में व्युक्त ।

$$\boxed{\begin{array}{l} \text{शौष} = \text{शृंग} = \text{अत्} \\ \text{शान्ति} = \text{आन्} \end{array}}$$

Ex — पठ + शृंग = पठन् पठन्ति पठत्

उप + शान्ति = उपमानः, उपमाना, उपमानम्

* (तद्वित व्युक्ति) *

① महुपू सूत्रयः — (एकसका है, वह इसमें है) इन अयों में
में व्योग ।

* विशेषण वाची ।

$$\boxed{\text{शौष} = \text{मत्}}$$

Ex = गो + महुपू = गोमत् (गोमात्)

श्री + " = श्रीमत् (श्रीमात्)

② व्यनि सूत्रयः —

$$\boxed{\text{शौष} = \text{कन्}}$$

Ex = चक्र + व्यनि = चक्रिन् / चक्री

बल + " = बलिन् / बली

③ त्व & तल् प्रत्यय :- माववात्य संज्ञा बनाने के लिए।

* त्व से नपुंशउलिंग में प्रयुक्त (ल शैष)

* तल् स्थीलिंग में " (ता शैष)

* एवं ~~त्व & तल् का शैष = ता~~

स्थीलिंग नपुंशउलिंग
Ex = देव = देवता देवतम्

गौ = गौता गौतम्

बन्धु = बन्धुता बन्धुलम्

④ ठङ् प्रत्यय :- शैष(ठङ्)का इक ही जाता है।

Ex = धर्म + ठङ् = धार्मिक

धर्माद + ठङ् = साधारणिक

स्थी प्रत्यय :-

① टाप् प्रत्यय = शैष "आ"

Ex - अज् + टाप् = अजा

② डीष् प्रत्यय = शैष "ई"

Ex - नर्ति + डीष् = नर्ती

③ झीप् प्रत्यय = ई शैष

④ झीर् " = ई "

संस्कृत में कुछ प्रमुख रचनाएँ

कादम्बरी - लाणभृत् → हस्तिरित्

उल्लरम्भरित् - भवभृति → मालतीमध्याल, महावीरचरित्

नैषस्थीयचरितम् - ली हर्ष → खण्डनखाद्य

कादम्बरी उल्लरादि - भृषणभृत्

पासवदत्ता

सुष्णु

शिवराष्विजय - अमिषकापत्रत्याल

नीतिशतकम्, वैराग्यशतकम्, वाक्यपदीयम् - भृद्वारि
(मुक्तनाम्य)

नायोपाच्यान → त्रिविक्षमभृत्

छुच्छचरित्, शाहद्वालभाटकु, महायान लक्ष्मोपाद - अश्वप्रौष्ठ

वृहतज्ञातकु → वर्णहमिहिर

सिद्धान्त शिरोमणि, करण कुतुहल, लीष्णगणित, भास्कराचार्य
बोस्ना भाष्य, सवती भद्र

देशकुमारचरितम्, कात्यादशि, अवंतीसुंपरी, दृढी
हन्दीविच्चिति

किरातार्जुनीयम् → भारवि

पञ्चतंत्र → विष्णुशर्मा

हितोपदेश → नारायणशर्मा

रावणभृत् → भट्टि

प्रबंधमंजरी → धृष्णिकेश भवाचार्य

वक्षीतिपूचालिका → सदृशलाकर

सरस्वतीकठठाभराम् → भौभराज

लघुसिद्धान्त कीमुदी, मध्यसिद्धान्त, सारसिद्धान्त, > वरक्षण
ग्रीविणिपदभन्धरी

सूक्ष्मकटिकम् — शुद्धक

भास के 13 नाटक — Very Imp —

(1) प्रतिहायीगन्धरायठ (प्राची) > उद्यन मूलक

(2) रघुनवासवदुता (२-पाठ)

(3) अभिषेक (अभिषेक) > रामायानमूलक

(4) प्रतिमा (प्रतिमा)

(5) उच्छवङ्गम् (भंग हुई) — उत्थान्त नाटक

(6) द्रुतघाकथम् (द्रुतवाक्यम्)

(7) पञ्चरात्रम् (पञ्चकुला)

(8) दृष्ट घटोऽक्षय (घटोऽक्षय)

(9) कठभार (कठी)

(10) मध्यमकर (मध्यमत्यायोग) (यथायाम)

(11) बालचरितम् (बालक)

(12) अविमारक (मारुर)

(13) दरिद्र व्यालदत्तम् (व्याल) > लोककथा मूलक

महाभारत

Trick → भास द्रुतघाकथम्, व्याल का यथायाम।

कठी की प्रतिमा, पञ्चकुला के नाम॥

घटोऽक्षय की मारुर, भंग हुई प्रतिभ्वा।

सपने में बालक, अभिषेक खाए उआम॥